रिकॉर्डः–कौन आया मेरे मन के द्वारे..... ॐ पिताश्री 13/8/1964

ओमशांति। शिवबाबा अपने मीठे–2 सिकीलधे शालीग्रामों को बैठ समझाते हैं। शालीग्राम ही शिव के बच्चे हुए ना। बच्चे जानते हैं हमको वो पढ़ाते हैं जिनको कोई रिंचक भी नहीं जानते। शिव के मंदिर में जाते हैं; परन्तु वहाँ तो इतना बड़ा शिवलिंग देखते हैं। वह थोड़े ही समझते हमारा बाबा बिन्दी है। जो बच्चे शिवबाबा को इतना बड़ा समझ याद करते होंगे वो भी भूले हैं; क्योंकि वो भी रॉंग है। बाप समझाते हैं मैं तो बिन्दी हूँ। अब बिन्दी को कोई क्या समझ सके। भल कोई कहते हैं, अखण्ड ज्योति स्वरूप है, फलाना है; परन्तु नहीं, वो है बिन्दी। उनको याद करना बड़ा मुश्किल है। घड़ी–2 भूल जाते हैं। भक्तिमार्ग में हिरे हुए हैं शिवलिंग पर फूल चढ़ाने, पूजा करने, तो वो याद रहता है; परन्तु यह घड़ी–2 भूल जाते हैं। हमारा बाबा बिन्दी रूप है। सारे ड्रामा में उनका जो पार्ट है वो बजाते हैं। अब बिन्दी की बैठ महिमा करेंगे क्या कि सुख का सागर है, शान्ति का सागर है। कितना छोटा बिन्दी रूप है। बच्चे पूछते हैं, किसको ध्यान में रखें। इन बातों को तो समझदार (ही) समझ सके। नहीं तो वो ही शिव का लिंग याद आ जाता है। कृष्ण तो अच्छी रीति बुद्धि में बैठ सकता है। यह तो है बिन्दी। गीत में भी कहते हैं याद करूँ तो याद न आवे। फिर वो सूरतियाँ भी वण्डरफुल है। इतनी बिन्दी है, ज्ञान का डांस करते हैं। कहते हैं– सपनों का संसार लिए....। सपनों का संसार कहते हैं। (बी)ती हुई बात को सपना कहा जाता है। सपना बन संसार जो (बी)त गया है वो तुम्हारी बुद्धि में आता है। सारा ब्रह्माण्ड, मूलवतन, सूक्ष्मवतन, सतयुग–त्रेता–द्वापर, सारा स्वप्न हो गया। जो पास्ट हो जाता है वो स्वप्न हो गया। अब कलियुग का भी अंत है। यह स्वप्न का संसार हुआ ना। वो हद के स्वप्न आते हैं, तुमको बेहद का बुद्धि में आया है। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी..... यह सब स्वप्न हो गया।

इनको कहा जाता स्वप्नों का संसार। इनका राज़ और कोई नहीं जानते सिवाय तुम बच्चों के। सतयुग में कितने अथाह सुख थे। वो सब पास्ट हो गए। अभी तुम बच्चों को बुद्धि में आदि–मध्य–अंत का पूरा ज्ञान है। एक बाप की ही याद रहनी चाहिए। बाप जो समझाते हैं, और कोई समझाय न सके। तुम्हारी बुद्धि में स्वप्नों का संसार है। यह–2 पास्ट हो गया है, बुद्धि जानती है ना। तुमको ऊपर से लेकर सारा नॉलेज बुद्धि में है आदि से अंत तक। तुम अब त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ बन गए हो। त्रिलोकीनाथ बनने से तुम जैसे भगवान हो जाते हो। भगवान बैठ तुमको शिक्षा देते हैं। सेकेण्ड में स्वप्न आता है ना। तो सेकेण्ड में तुमको सारा याद आना चाहिए बीज और झाड़। बाबा भी कहते हैं आदि–मध्य–अंत का मेरे पास ज्ञान है। इसलिए ही मुझे ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल, जानीजाननहार कहते हैं। जानते हैं हर एक ही अवस्था ऐसी ही रहेगी। एक–2 की हम क्या बैठ जानेंगे! जो अवस्था कल्प पहले थी इस अवस्था में है। सो तो तुम भी जानते हो। पुरुषार्थ कराने लिए कहते हैं अच्छी रीति पुरुषार्थ करो। तुमको स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। तुम जानते हो, यह–2 पास्ट हो गया है। ऐसे देवताएँ राज्य करते थे, फिर जाकर राज्य करेंगे। पास्ट, प्रेज़ेंट, फ्यूचर यह याद करते रहेंगे। इनको ही स्वदर्शनचक्र कहा जाता है। शिवलिंग को याद करने तो सब हिरे हुए हैं, तो समझते हैं बाबा ज्योतिर्लिंगम है। बिन्दी कहें तो मूँझ पड़े। वो तो अंगुष्टे मिसल है। शालीग्राम भी अंगुष्ठे मिसल है। वो तो समझते हैं आत्मा छोटी है, परमात्मा बड़ा है। अभी तुम बच्चे जानते हो। इस कलियुगी दुनिया में इस समय देखो भभका कितना है! इनको माया का भभका कहा जाता है। माया का पॉम्प है। कहते हैं ना अभी दुनिया कितनी अच्छी बन गई है। बड़े–2 महल बन गए हैं। अमेरिका का कितना भभका है! चीज़ें कितनी नफी(स) बनी है। हम समझते हैं यह तो मुलमे की चीज़ें हैं जो अभी खत्म हो जावेंगी। दिन–प्रतिदिन बड़ी–2 इमारतें, डेम्स आदि ऐसी बनावेंगे बिल्कुल जैसे नई दुनिया है। मायावी पुरुष हैं ना! आसुरी सम्प्रदाय का भभका है। यह सब है तलसम। अभी गया कि गया। बड़े–2 साइंस घमंडी जो हैं उन्हों की बुद्धि में है कि यह तो सब खत्म हो जावेंगे। एक/दो को कह देते हैं तुम इन्टरफीयर न करो, नहीं तो सब खतम हो जावेंगे। अमेरिका अपन को बलवान समझते हैं। तो ज़रूर सेकेण्ड नम्बर में भी होगा जो समाना करे। गाया हुआ है– दो बिल्ले लड़ते हैं। यादवों ने अपने कुल का नाश किया। तो दो बिल्ले हुए ना! वो ही प्रैक्टिकल हो रहा है। तुम बच्चे जानते हो, आगे भी इस समय ही तुमने नॉलेज ली थी। अब भी ले रहे हो। बाप आकर सारी नॉलेज समझाते हैं। जैसे बाप की बुद्धि में है, वैसे तुम बच्चों की भी बुद्धि में है। बरोबर शिवबाबा है। शिव कहा जाता है बूरी को। आत्मा में भी सारा पार्ट है ना। तुम्हारा है ऑलराउण्ड पार्ट। सतयुग से लेकर कलियुग तक। सतयुग–त्रेता में तुम जब सुख भोगते हो तो उसी समय बाप का कोई पार्ट नहीं। बाप कहते हैं, मेरे से भी तुम्हारा जास्ती पार्ट है। तुम सुख में रहते हो तो मैं निर्वाणधाम में हूँ। मेरा कोई पार्ट ही नहीं। तुमने ऑलराउण्ड पार्ट बजाया है तो थके भी तुम होंगे; इसलिए लिखा हुआ है– चर्ण दबाए हैं। बुज़ुर्ग लोग कहते हैं, बच्चे, तुम थक गए होंगे। तुमने आधा कल्प भक्ति के घर–2 धक्के खाए हैं। भक्तिमार्ग में भटकते–2 तुम थक जाते हो। फिर बाप आकर उजूरा देते हैं। पुजारी से पूज्य बना देते हैं। तुम जानते हो हम सो पूज्य थे फिर पुजारी बने हैं। ऐसे नहीं कि परमात्मा ही आप ही पूज्य, आप ही पुजारी है। नहीं। हम ही बनते हैं। भारत ही प्राचीन अविनाशी खण्ड गाया जाता है। भारत है शिवबाबा की जन्मभूमि। जन्म भूमि पर ही मनुष्य कुरबान होते हैं। काँग्रेसियों ने भी देखो कितना माथा मारा जन्म भूमि से फॉरेनर्स को बाहर निकालने। यह जन्म भूमि स्वर्ग था। फिर 5 विकारों रूपी माया रावण ने आकर हप किया है। हम रावण को बड़ा दुश्मन समझते हैं। यह कोई भी नहीं समझते

कि बड़े ते बड़ा दुश्मन माया रावण है जो हमारी राजाई खा गया है। उन(से) हमने हराया है। यह है गुप्त। चूहे के मुआफिक फूँक देती और काटती रहती जो किसको पता भी न पड़े। काटते–2 एकदम डेवाला मार दिया है। किसको पता नहीं है, हमारा राजभाग किसने गँवाया। रावण ने कैसे हप किया। तो यह बेहद की बातें हुईं ना। माया ने सारा राजभाग छीन लिया है। कोई को पता नहीं है, हमारा दुश्मन कौन है, हम कंगाल कैसे बने। माया बड़ा चूहा है। आधा कल्प खाके–2 भारत को वर्थ कौड़ी बना दिया है। बड़ी बलवान है। अभी फिर तुम उनपर जीत पहन रहे हो छुपके से। तुम जानते हो हम कैसे गुप्त रीति राज्य ले लेते हैं। जैसे गुप्त रीति (गँवा)या है, फिर लेते भी गुप्त रीति से है। कोई भी नहीं जानते। अभी फिर उस पर जीत पानी है। कितने महीन राज़ है। बाबा की मदद से हम फिर राजभाग लेते हैं, कोई हाथ–पाँव नहीं चलाते हैं। गुप्त रीति से हम अपना बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं, जो आधा कल्प रहेगा। वो माया चूहा तो आहिस्ते–2 खाती है और अभी राज्य तो तुम एक ही बार ले लेते हो 21 जन्मों लिए। 84 जन्मों का राज़ भी तुमको समझाया है इतने–2 जन्म लिए हैं। तुम जानते हो, सतयुग में हमारी आयु बहुत बड़ी थी, फिर अपवित्र भोगी बनते हैं तो द्वापर–कलियुग में 63 जन्म लेते हैं। यह बाबा बैठ समझाते हैं, कल्प–2 माया ऐसे राज्य लेती है, फिर हम उनसे लेते हैं। गीत में गाते तो हैं कौन देश से आया, कौन देश है जाना; परन्तु समझते नहीं हैं। तुम तो जानते हो, आत्मा किस देश से आई है, क्यों आई है। सारा चक्र बुद्धि में है। सारे ड्रामा में हीरो–हीरोइन का पार्ट है शिवबाबा का। शिवबाबा के साथ पार्टधारी कौन–2 हैं? पहले–2 जन्म देते हैं ब्र०वि०शं० को, फिर तुम बच्चों को। तुम बाप के साथ मददगार ठहरे। बाप अपना पार्ट बजाय अपने धाम चले जाते हैं और तुम मददगारों को भी (साथ) में मुक्तिधाम ले जाते हैं। तुम मुक्तिधाम जाय फिर जीवनमुक्ति में चले जावेंगे। कितना अच्छी रीति बुद्धि में रखना चाहिए। स्वप्नों का संसार। जानते हो सतयुग–त्रेता में देवी–देवताएँ थे। अभी नहीं हैं। गीत का कितना गुह्य राज़ है। कैसे स्वप्नों का संसार बुद्धि में ले बैठे हैं, यह सारा चक्र कैसे फिरता है। जो नॉलेज बाबा में है वो हमारे में भी है। बेहद के बाप में ही यह सारी बेहद की नॉलेज है। बच्चे जानते हैं, यह भी स्वप्न हो जावेगा। यह बड़ी समझने और समझाने की बातें हैं। सतयुग–त्रेता में यह बातें किसकी बुद्धि में होती नहीं। गुह्य ते गुह्य प्वाइंट्स मिलती रहती हैं। बुद्धि में सारा चक्र रहना चाहिए। भक्तिमार्ग क्या है, कब से शुरू होता है। इ(स)से कुछ भी फायदा नहीं हुआ। करते–2 नुकसान में ही आ गए हैं। अब फिर कौड़ी से हीरे जैसे बनते हो। माया कौड़ी मिसल बना देती है। बाबा ज्ञान का डांस सिखलाते हैं। फिर वहाँ जाकर तुम डांस करेंगे। यह सब बातें बड़ी वण्डरफुल जानने लायक हैं। यहाँ की रसम–रिवाज़ वहाँ बिल्कुल नहीं होती। वो है ही वाइसलेस वर्ल्ड। माया का वहाँ नाम–निशान नहीं होता। पहले तुम बाबा को याद कर वर्सा तो ले लो। बाकी वहाँ की रसम–रिवाज़ जो होगी वो ही चलेगी। तुम पहले बाप को जानकर वर्सा तो लिओ। वहाँ की रसम–रिवाज़ सब नई होगी। वहाँ यह उतसड(उत्सव) आदि होंगे नहीं। यहाँ गमशीन रहते हैं तब शादमाना आदि मनाते हैं। वहाँ तो नित्य है ही शादमाना। रोने की बात नहीं रहती। उतसड(उत्सव) मनाने की बात नहीं। सदैव हमारे बड़े दिन होंगे। हाँ, शादी धामधूम से होती है। ..... मिलता है, दास–दासियाँ मिलती हैं। बाकी त्योहार आदि की दरकार नहीं रहती। यह है ही संगमयुग के, जो भक्तिमार्ग के गाए जाते हैं। वहाँ तो सदैव खुशियाँ ही खुशियाँ है। अच्छा, मात–पिता, बाप–दादा का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ